विषय-सूची

—:※:—

विशुद्ध डाक वचन

—विशुद्ध डाक वचन—

(तालपत्र-लिखित)

—००※००—

राशि-स्वभाव विचार—

मेष मीन तिअ दण्डा दीस,
सा उप्पर दिअ पल अठतीस ।
वृष कुम्भ चौदण्डा मान,
पल एगारह भृगु तिस भान ॥
मिथुन मकर पल तीनि गुनू,
कर्कट सैतालीस धनू ।
सिंहहि वृश्चिक सप्तत्तीस,
तुल सह कन्या पल अठतीस ॥
मिथुना सखो मोखे ,
मोखे सब पल कहिअ ।
पाँचे दण्डे सबे पल लहिअ ॥

तिष्या कर्णा बाडला भुञ्जय देवहा तीस ।
ताड़े ओढ़े भुमिसुअ मास अठारह सीस ॥
जत्ते देवहा चन्दगउ तत्ते शनि रवि साजि ।
बारह मास बेह्प्फय इलिथ शुनि धुतु कानि ॥

मुहूर्त्त विचार—

तिथि परिमाणइ साठि दण्डा, से लए करइ बारह खण्डा ।
अद्रा भद्रा कित्तिक मूल, भनइ डाक सबेटा करे चूर ॥

सिद्धियोग (तथा च डाकः)—

नवम्मी चौठि चौदिशि भउ थोड़े,
पड़िव एकादशि छठिक विजोड़े ।
तिथ अठ्ठम्मि तेरथि भूपुते,
सत्थोम्मि दुइ दोआदशि वा च्चे ।
पाँचम्मि पुनिमा दशम्मि वेहप्फय,
सिद्धियोग एहु मुनिवर जम्पए ॥

यमघण्ट विचार—

जइ रविवारे मघा धनिष्ठा सोमे पुष्य विशाषा(खा)लद्धा ।
मङ्गल कृत्तिक भरणि विरुद्धा, कर पूर्वफल्गुनी बुध विरुद्धा ॥
वारे वेहप्फइ मूल रेवती, शुक्क(क)हि बारहि रोहिनि स्वाती ।
श्रवणा शतभिश जइ शनिवारे, एहु यमघन्ट कहिअ गोआरे ॥

दग्धतिथि—

सनि सत्तें शुक्क लए दुइ, छठि वेहप्फय होए विरुद्ध ।
बुध तीअ दोआसि सूर, मङ्गल दशमी परिहर दूर ॥
होए एकादसि सोमेवारे दग्धतिथि फूर कहिअ गोआरे ॥
(रवि-१२, सोम-११, मङ्गल-१०, बुध-३, गुरु-६, शुक-२, शनि ७)

राहुदय—

पूब्बा दाइ पायाउने (ले ?) आरस चलन्ते चलइ ।
दिस्स विदिस्से लाइ वामे पाछे शुभ कहइ ॥
जइ आगोतइ खाइ........................

योगिनी विचार—

पली पच्चा पासा दूआ, नवे नवे योगिनि हुआ ॥
(ई पाठ छपल "डाकवचनामृत" मे भेटैछ)

पशुयात्रा विचार (तत्र डाकः)—

तिन्निओ पूब्ब मृगसनि ज्येष्ठा-
भरणि विशाष (ख) अशलेस धनिष्ठा ।
चालिअ चौपा होइह वृद्धी,
जत्तहि चालिअ तत्तहि सिद्धी ॥

द्वितीयोदितचन्द्र विचार—

मच्छाभेड्डा दाहिना अवसरे उत्तर काम्भि ।
धनइव लद्दा समहिसम अवर बोलि सून्नू काम्भि ॥

अठदिशा—

पत्त विराड्डा सिह सुनइ एहि मूसा गज मेष ।
अच्चे हले दुइकरसे गुणि वर गपमान उलेख ॥
मेषे मूसें बहुसम्पत्ती गजे विराड़े अतिकर सुद्धी ।
नागे सिहे होइह खेड्डा—सुनहे धरि पल्लाविअ भेड्डा ॥

नवान्न भक्षण (तथा च डाकः)—

अस्सनि रेवए अवर धनिट्ठा
हत्थ आदि कए पाचम खण्डा

एकरा उत्तर दुइ गुरु मन्त्री
कापल परिहड न करह भन्ती ॥
संखा सो (ना ?) ... परिहड रत्ता
वरषा शत एक जीवतु कन्ता ॥
पुष्य पुनर्वसुहुँ सुपरिहरह रोहिणि पालह बज्र,
तीनि उत्तर परिहरह जइ भत्तारे कज्ज ॥

बीजवपन-विचार (तथा च डाकः)—

कदुइ धान कि अस्सनि श्रवणे
अद्रा रेवए मृगकर मूले ।
मघा सवाती न कर विचार
वाउन सुरुगुरु शुकर वार ॥

ग्रामवास विचार—

सेवक रे सुनु गामक वत्ता,
अक्खर दोगुण चौगुण मत्ता ।
गामे नामे एक करिज्जइ,
मुनि अङ्के भाग हरिज्जइ ॥
एक सून जओ पावसि चारि,
छाड दलतिहि होइह मारि ।
तीओ पाँचे मान समान ।
वेबिछक जओ पावसि ओरे,
सर्वओ वित्त समरपिह तोरे ॥

अठदिशा—

पच्ची वसुशर पञ्च मजार-
षट् केशरी सुनह सरचारि ।
अहिशर सात इन्दुशर एक,
गजशर तीनि बेरिशर मेष ॥
पत्ति विराड़ा सिह सुनह-
अहि मूला गज मेष ।
अचे हले मिलि दुहु करसे,
शुनिवर सपमानवशेष ॥

मेषे मूसे बहुसम्पत्ती – गजे विराड़े अतिकर सिद्धी ।
नागे सिंहे होइह खेड्डा–सुनहे धरि पञ्चो तिथ्य भेड्डा ॥

अपर गौड़ीय प्रकार—

गामे ठामे नामे जान सोम शुक्र बुद्ध पो (खो) जिआने आन ।
बोलथि डाक एतेओ कएलेप(ख)बलपँ कालें किछु सम्पए देख ॥

फलश्रुतिः—

अबो कुजे लावद ठाओ गोधन जन नहि बढ़ावए काओ ।
उदये हो तँ बढ़ए अन्न, उदय भरि अ.न पावए भओ ॥
चान्दे बुधे लावद ढाओ तारेहि बसा सम्पत्ति पुत्रजाओ ।
लच्छी थाकद ता. हेरि गेहे, होइ चान्द ठानि रह पहरे ॥
गुरुदीसा लाभ छाड़िआओ मूलहुँ चोरी बोलए चालए ।
सकुलए नव सञ्चित धन न हरइ नर..................॥

शुक्रहि दीसा बढ़ए जबे पुत्र परिवार बढ़ावए सबे ।
सनि दीसा लावए पू०·········· हाथे आतप लावए दूर ॥

अपरञ्च डाकः—

बरगाक कर सबे बूझइस आन,
बूझितहुँ बूझिइसँ कर अनुमान ।
जोइलि जोए सदिय कएलेइ,
दाहिन सर वाम कएलेइ···॥
सुन सुन स्वामिओ गासक नाग,
जे जाइ आगर से ने भाग ॥

गर्भापत्य जिज्ञासा (अपरञ्च डाकः)—

अक्खर दोगुण चौगुण मत्ता भाग हरि   सूड जबे वेत्ता ।
चक उब्जारे नाव इकारे एहु धनी फूर कहल गोआरे ॥

स्त्री-पुरुष जीवन-मरण जिज्ञासा—

अक्खर दोगुण चौगुण मत्ता भाग हरइ सा हरखि नेत्ता ।
एक सून जओ पुरुष हल(थ?)ट्ठा, वेरि होए जओ तिरि अबिल(था?)ट्ठा

अथतेवा चक्रम् (तत्र डाकः)—

सिरसत्ता उरसत्ता पिथिहिं देहि पञ्चण (म?) खत्ता ।
हाथे दुइ-दुइ पादहि चारि सेवाचक्र कहओ विचारि ॥
सिर सम्मानइ देइल दव होओ वित्त संसम्पइ लब ।
हाथे देइल पुरवइ आस पिथि (ट्ठि) हि निष्फल पाओं परवास

अरिष्टक लक्षण (तत्र डाकः)—

धनु वृष वृश्चिक मृगसानी भरण करा अरिष्टक जानी ।

[ई म० म० हरपति कृत "व्यवहार प्रदीप" मे जे वचन प्राप्त भेल अछि ओकर प्रतिलिपि थिक ।]



[२]

[१. म० म० महाराज शुभङ्कर ठाकुर कृत "तिथिद्वैध निर्णय" सँ]

सुखरात्रि विचारे डाकः—तथाच भाषा—

स्वाती दीआ जो बरए विशाखा खेलए गाए ।
अवस ओ नरवर जुज्झए अन्न महग्घा जाए ॥

००००

[२. "ग्रामवास विचार" ग्रन्थमे प्राप्त वचन]

ग्रामवास विचार (अत्र डाकः)—

उत्तरे आगत फहिहे थीर-
दक्षिण कुशल कहए बलवीर ।
पूर्वे दिगे काज निषेध
पश्चिम दिशा तहिखने पेध ॥
चारि चौदीश कह दण्ड फारि
छोड़इ दरघरि होइह मारि-
उत्तर दक्षिण कुशल थिर कहवास-
चारू कोन बोल उदास ॥

पश्चिम दिशा दूर सखि बोल-
करह काज पिआ होएत अमोल।

ग्रामवासविचार क प्रक्रिया शित्रावलि पर अछि।

००००

[३. हरिपत्र-लिखित "विक्रमोर्वशी नाटक" मे प्राप्त वचन]

तरुरोपण विचार—(तत्र डाकः)

पिप्पर पाकड़ि पयधर काँट—
पच्छिम लोहित फूल नहि आँट।
वायव तेतरि उत्तर तार
ईसानक बदरी परत अकाल॥

००००

[४. "अर्कार्णव" नामक ज्योतिष क ग्रन्थ सँ]

अथ शुभयोगिनी, यथा वा डाकः—

पत्नी पञ्चा खसा दूआ नवे-नवे योगिनि हुआ।
अओथे योगिनि पचदह उद्धे दह परमान।
वामे दहिने तेरह तेरह नओ सम्मुख कए जान॥

फलमस्य—

अओथे योगिनि मार मारकर, पाछे अति सुखदेए।
वामे योगिनि लाभ करावए, दहिने जीव हरिलेए॥

काक शकुन, डाकः—

रवि लाभ [भ] सोम अरु सिद्धि, मङ्गल कलह परवास।
बुद्ध [ध] समागम बन्धु सँ, गुरु पूरए सबे आस॥
शुक्र अभोअ''' शनि मरण, काल मन्दफलजीन।
दाहिन दिन अरु वाम गुण, काक वचन परमान॥

वर्षा सुवृष्टिफलम्, अत्र डाकः—

फाल्गुन चौदिस सन्ध्याकाल-
वर्षा बूझब वाय विचार।
पूर्वँ पुरिआ बहए अनङ्गे-
एक ओ मेघ न लागए अङ्गे॥
अग्निकुमारी बोलए डाक-
भुपे न मरते परजा भाग।
दक्खिन पवन बहए ऋतुराज-
अन्न न उपजए हाहाकाल॥

दक्खिन कोने सत्र खन बहइ-
अवस सुभिक्ष निरन्तर रहइ।
पच्छिम पछवा बहए अपार
कोदव कुरथी हो पैबहार॥
भण्डार कोन बोलए थोड़सि-
धोथी धोआए। कूओँ पैसि।
उत्तर पवन सहज जओं बहइ-
भेड़रि अन्न मूल लहु कहइ॥
ईसान कोने दुन्दुर बाजए-
सरि साक बसबे उपजावए॥

एतक परए वह जओं चारुवात-
अन दए धरनी अन दए वात॥

चन्द्रविचारः—

मेष सिंह धनु पूरुवे चन्दा–
दछिण कन्या वृष मकरन्दा।
पश्चिम कुम्भ तुला अथ मिथुना।
उत्तर कर्कट वृश्चिक मीना॥

अथ यात्रायात्रायां डाकः—

अश्विनि गमन कहए शुभ सिद्धी-
भरणी गेल न जिब अबुद्धी।
किर्तिक कायक लन्तद दिजए-
रोहिणि गमन मनहिमन खिज्जए॥
मृगशिर गेल रभस बढ़ावए–
अद्रा गेल पलटि न आवए।
पुनु पुनु सिद्धि पुनर्वसु गमने–
पुष्यहि लेखि की लेपब गमने॥
गउ असरेस पइस कलेसे–
मघा गेल घर यम केरे।
पूरुबा फल्गुनि कज्ज न सिज्झइ–
तिअ उत्तर हुर यम पाशहि बज्झिअ[इ?]॥
हस्थहि हस्त कहओ सम्पत्ती–
चित्ते चलइ न परइ विपत्ती।
रमत सोआती जाएत जाँहा–
मरत विशाखाँ जाएत कहाँ॥

अवस ओ काज होइह अनुराधे-
जेट्ठा पेट भरए उँचाहे।
मूल मूल किचड गुण पाइअ–
पूर्वाषाढ़ पलटि न आइअ॥
श्रवणा गेल कि सुनिअ अथ श्रवणे–
असुभफल होइह धनिष्ठा गमने।
शतभिष हो जओं देव पसन्ना–
रेवए रमए होअए बहुधन्ना॥
पड़िवा नवमी मूळ शनि श्रवणा–
पूर्वे दिशि नहि सिज्झए गमना।
पञ्चक अश्विनी वान गुण तेरह–
एहि दिवस जनु दछिण हेरह॥
रवि छट्ठि चौदसि रोहिणि पुषा–
पश्चिम गमने होइह दुष्षा।
कुज दुइ दशमी जओं······होअ–
हस्था उत्तर गमने अवस्था······॥
अद तिअ सोमे अनन्दए उच्छए–
चौरए अवसि बुध नहि लच्छइ[ए?]।
अकके सप्तमि वायव नट्ठा–
डाक कह कुट्ठ सफट्ठा॥

बीज वपन विचारः—तत्रडाकः—

कृषिकाज बोआर मानव–
चारिकाज अठदास वपा (खा) नव।

—बारह—

पूर्वँ नवँ अनाइचि कोणे—
दक्खिन किञ्चित् नैर्ऋत सोने ॥
पच्छिम लाभ कोण पतङ्ग—
उत्तर देय बहुत सुखरङ्ग ।
ईशान कोण दैवसे जाए—
सगुनक देल सबे केओ खाए ॥
शुक्रद बान शनीश्वर अरु थोड़—
मङ्गलवार बिआ हो थोड़ ।
रवि अनाइचि सोम पद्दहा—
बुद्ध (ध) बृहस्पत बाउग कँहा ॥
[बाउग रोपन जोतन इरठाठ ? ।]



—अथ प्रकाशित खण्ड—

मङ्गल वचन

गिरजा गिरा श्रो गोविन्द गणेश,
सकल काज मे सुमिरी गिरिजेश।
पाँच गकारँ विघ्न नाहि होय।
कहथि 'डाक' ई बुझु सब कोय ॥१॥

अथ सामान्य प्रकरण

तिथि नाम ज्ञान वचन—

पड़िवा षष्ठी एकादशि नन्दा
द्वितीया सप्तमी द्वादशि भद्रा।
तृतीया अष्टमी त्रयोदशि जया
नवमी चतुर्दशि रिक्ता भया॥
पञ्चमी दशमी पञ्चदशी
अमावास्या, कहथि "डाक" ई पूर्णासमा॥

सिद्धि योग—

शुक्रक पड़िवा एकादशि होई,
सिद्धि योग कह पण्डी सब कोई।
बुधवासर जौँ भद्रा पावै,
सिद्धि योग तेहि जग मे गावै॥

जया तिथहिँ जौँ मङ्गल होय,
सिद्धि योग मन मानीय सोय।

शनि दिन मे रिक्ता जौँ आवै,
सिद्धयोग गुनि जन तेहि गावै।

पूर्णा तिथि गुरु वासर जानि,
सिद्धि योग कह "डाक" बखानि॥

निन्दित योग—

रवि मङ्गल मे नन्दिका,
भद्रा मे शुक्र चन्द्र।

बुध मे जया गुरु रिक्ता,
शनि पूर्णा अति मन्द॥

दग्ध तिथि विचार—

मेष कर्क केर षष्ठी होई,
धनुष मीन द्वितीया जोई।

वृष कुम्भ चतुर्थी जान,
अष्टमि कन्या मिथुनहि मान॥

वृश्चिक सिंह दशमी भान,
मकर तुला मे द्वादशी गान।

एहि विधि तिथि कैं दग्धा कही,
शुभ कारज सब छोड़ि रही॥

तारा विचार—

जन्म नक्षत्र सँ इष्ट नखत्रा,
गणना केरि धरि देखिय पत्रा।

जावत अंक एकट्ठा भेल,
तकरा कैं नव सँ भजि लेल।

शेष बाँचय से तारा जान,
कहए "डाक" नाम गुण फल मान।

तारा नाम विचार—

जन्म सम्पत्ति विपत्ति अरु क्षेम,
प्रत्यरि साधक वध सुनु नेम।

मित्र ओ अति मित्र तारा नाम,
"डाक" कहथि फल के धाम।

चन्द्रफल विचार—

जन्म राशि सँ गणना करी,
ओहि नक्षत्रक चन्द्रमा धरी।

यावत अंक आवै ई विधि,
चन्द्र ज्ञान जानी एहि सिधि।

चारि आठ बारह के त्यागि,
शेष चन्द्र शुभ कहिहह लागि।

प्रत्यार्थ घरमे प्रवेशक समय—

रोहिणि श्रवणा सूर्य्य नक्षत्र
शुभ वासर पैसी देखि पत्र।

कुलित योग मे जन्मक फल—

शनि रवि मंगल तीनू तेजा
श्रवण धनिष्ठा ओ अश्लेषा।
ओहि राति जँ बालक होय,
मात पिता संहारय सोय॥
आप मरै कुल भरि संहार,
राशि गुनैत बाभन के मार॥
लग्नहि कुजा लग्नहि सुजा,
लग्नहि होयए भानु तनुजा।
की मर जननी की मर बाप,
की ओ जातक अपनहि आप॥

प्रसूतीक स्नान समय—

अनुराधा अश्विनी ध्रुव हस्ता,
स्वाती पौष्णा नक्षत्रे शस्ता।
कुज रवि गुरुदिन करी नहान,
कहथि "डाक"प्रसूती के जान।

स्नानपानक दिन—

रिक्ता मंगल छोड़ि के षिष्ठी,
व्यतीपात वैधृत अति दुष्टी।
मृदु ध्रुव क्षिप्र नक्षत्रे जान,
कहए "डाक" माताक स्नान पान।

प्रथम क्षौर (मुंडन) क समय—

नहि गुरु शुद्धि वेद प्रकार,
शुद्ध समय कँ करु ने विचार।
विषम वर्ष उत्तरायण जानि,
चैत छाड़ि शुभवासर मानि॥
जन्म मास के दीछए त्यागि,
ज्योतिष उक्त नक्षत्र लागि।
आदि क्षौर बालकेर होय,
"डाक" कहथि जानथ सब कोय॥

कर्णवेध—

जन्मक तारा जन्मक चन्द्र,
जन्म मास ओ जन्म महेन्द्र।
दक्षिणायन छोड़ि जानी शुभवार,
सूर्य्य शुद्धि केर करी विचार।
अश्विनि पुष्य हस्त अरु अभिजित,
मृग अनुराधा रेवती चित।
स्वाती हस्त ओ उत्तर तीन,
विषम वर्ष कनछेदक दीन॥
शुभग्रहमे शुभ लग्न सुकाल,
शुद्ध समय लेल "डाक" बेहाल।

खड़ी धरबाक—

सौम्यायन शुभ कालहिँ जानि
पाँचम बर्षमे खड़ी आनि।
गणपति विष्णु सरस्वतीमा,
पूजन कय शिशु आखर कामा॥

उपनयन—

गर्भाष्टम बाभन कँ काज,
एगारह वर्ष क्षत्री केर लाज।
बारहम वर्षे वैश्य केर बाल,
मनुष्य समय हेतु सबहिं बेहाल॥
सोलह बाइस चौबीस पर्यन्त,
क्रम सौं व्रात्यसावित्रीकन्त।
वर्ष शुद्धि कह "डाक" गोआर,
पाँच सौं सातहुँ करी विचार॥
मकर कलस मछली अरु मेष,
वृष मिथुन मे धरु व्रत भेष।
द्वितीया तृतीया पंचमी शुभवार,
दशमी एकादशि द्वादशि आर॥
सन्ध्या गलमह अन्ध्या त्याग,
कृष्णपक्ष ओ ग्रहणक भाग।
गुरु दुनूके शुद्ध करि जानि,
धर्म्मशास्त्र सँ होए बखानि।

आर्द्रा श्लेषा जेष्ठा मूल,
रोहिनि उत्तर तीन समतूल।
मृग चित्रा रेवति अनुराध,
हस्त पुष्य अश्विनि व्रत साध॥
दिति त्यागि तीनू पूर्वा जान,
"डाक" कहथि उपनयनक मान।
श्रवण पुनर्व्वसु स्वाती,
कहथि "डाक" उपनयनक पाती॥

अथ गृहस्थ प्रकरण—

संमुख दक्षिण दोष नहि हो,
कहथि "डाक" एक युक्ति इहो।
माघ फागुन जेठ अषाढ़,
कन्या विवाही कहथि गोआर।
रोहिनि रेवति मूल ओ स्वाती,
मृग मघा अनुराधा नाथी।
द्वितीया, तृतीया पासा एगारह,
तिथि कँ उत्तम जानि विचारह॥
पन्द्रह तीस चौदह नौ चारि,
त्यागि मध्यम कह शेष गोआर।
रवि कुज शनि बासर कँ जोड़ि,
अधपहरा भद्रा कँ छोड़ि॥

दग्धा तिथि मासान्तहि त्यागि,
करी बिआह शुभ शुभ कैं जागि ।
जौं कन्या नहि रखबा योग,
शुद्ध जानि करु विवाह सुभोग ।

वधू प्रवेशक समय—

करी विवाह दिन सोलह मध्ये,
विषम मास ओ वर्षहि साध्ये ।
हस्त आदि कैं तीनि नखत्ता,
मघा श्रद्धा मृग पुष्य धनिष्ठा ॥
श्रवणा उत्तर मूल अनुराध,
अश्विन रेवती बधू प्रवेश साध
गुरु शुक्र चंद्र शनीचर दीना,
कहथि "डाक" बधु प्रवेसन बीना ।
आठ पाट बारह बुधवार,
रिक्तहुँ त्यागी कहथि गोआर ।
शुक्र सूर्य्यक दोष नहि लाग,
चन्द्र तार बलहुँ के त्याग ।

द्विरागमन—

विषम वर्ष घट अलि ओ मेष,
मिथुन क रविएँ दूरागमन देख ।

मृदु ध्रुव क्षिप्र चर ओ मूल,
शुभ बासरमे करि समतुल ॥
रवि गुरु शुद्ध जानि कैं कही,
दक्षिण संमुख शुक्र छोड़ि रही ॥
शुक्र पक्षमे करिअह जानि,
"डाक" कहै छथि समय बखानि ॥

शुक्रान्धता कथन—

रेवती सौं मृगसीरा पर्यन्त,
यावत दिन धरि चन्द्र उगन्त ।
तत दिन शुक्र अन्ध भयजाथि,
वर द्विरागमन करौंलैं जाथि ॥
संमुख दक्षिण कहथि "डाक"—

संमुख शुक्र पीठ दीश बुध,
ऐहना समयँ दैत्यगुरु शुद्ध ।

डीह गुनबाक—

करत समान नापि कए काठी,
दीर्घ प्रमान नापि कए बाँटी ॥
एके ढाड़ दूजे चमार,
तीनैं विप्र चौठे शूद्र ।
पाँचे यम छठे क्षत्री,
साते योगी आठैं गुन ॥

हाड़ी पहिरावए साड़ी,
चमार लय जाय काड़ी ।
विप्र विचिन्त आनीबो,
शूद्र बहुत धन देबो ।
यम पड़ीबो रोगी,
क्षत्री करीबो भोगी ।
योगी करए अन्नदूना,
घूना करी ओ सूना ।

डीह पर वास्तुक—

अक्षर दोगुन चौगुन मात्रा,
पूछों कन्या गामक वार्ता ।
गामेँ नामेँ एक करी,
तासे साते भाग धरी ।
बेरि बेरि छठचो पावह मोरे,
गेलो बितल पलटू तोरे ।
एक शुन्य जोँ पावए चारी,
छाड़ह गाम कि होयए मारी ।
तीजेँ पाचै मान समान,
कहथि "डाक" ई गाम प्रमान ।

घर गुनवाक—

एक अनेक तीजे धनवान, पाँचे होइ पुत्र फलवान ।
साते महा पदारथ सिद्धि, कहए "डाक" जे एहि घर विधि ॥
(पाठान्तर)

गामेँ नामेँ डीह एक करी,
तामे आठेँ भाग धरी ।
घर आङन कनिअह जानि,
ई कहै अछि "डाक" बखानि ॥
पक्षी बसु पञ्च मजार,
पट केसरी श्वान सर चार ।
अहिसर सात इन्दुसर एक,
गज सर तीनि बेनु सर मेष ॥

वैरिमित्र कथन—

पक्षिराज केसरि जोँ संग,
साप श्वान केँ दोवर रंग ।
गज मजारे द्वी उत्पत्ति,
मेष ओ मुसहि बहु सम्पत्ति ।
पक्षी नाग करत संहार,
वन बिलाड़ मूसा के मार ।

कौन ग्रहक दशा मे घरबनओलें कौन फल—

रविक दशा जोँ करी घर,
घरनी राजा झगड़ा कर ।
सोम क दशा जोँ करी घर,
दूधे पूते भरी घर ।
मंगल क दशा जोँ करी घर,
घोड़ा घोड़ी मनुप मर ।

बुध क दशा जों करी घर,
बेटी बेटें मरय घर।
गुरु क दशा जों करी घर,
अटुट लक्ष्मी आवए घर॥
शुक्र क दशा जों करी घर,
खीर खाँड़ लय भोजन कर।
शनि क दशा जों करी घर,
घर घरनी मरय पर॥
राहु क दशा जों करी घर,
सकल गोष्ठी मरय पर॥

पुनः—

रवि कर कइल धन शनिवार,
मंगल मरण कहल गोआर।
बुध मे धन बिहफे हो सिद्धि,
शुक्रहिं भोजन हो बहु बुद्धि।
शनि हो रोग शोक औ हानी,
काल क दशेँ मरण कें जानी॥

कतया हाथ क गृह कर्त्तव्य—

गृहपति हाथ करब परमान,
जत चाकर दीर्घ गुनि आन।
एक छाड़ि आठ सो हरब,
बाँकी रहल से लेखा करब॥

फल—

एक अनेक तिए धनवान,
पाँचे पुत्र होई फल मान।
सातेँ सकल मनोरथ पूर,
कहह "डाक" घर एहि विधिकूर॥

सूर्य मंडल, चन्द्र मंडलक विचार—

दीर्घ चाकर सम जों होइ,
रवि मंडल कह सब कोइ।
मंडल चन्द्र विविध सुख दाइ,
उत्तर दक्षिणे दीर्घ जों पाइ॥
घर आङन विनु जों करइ,
पुत विस चित्त सबहु के हरइ।
सोइह हस्त ऊँच नहि कीजए,
"डाक" कहथि जे दिनदिन छीजए॥

वास्तु खात लेबाक दिन—

आदि भादव पूबे शीश,
दक्षिन पश्चिम उत्तर दीश।
तिनि २ मास विचारि भाग,
वाम भाग सुतथि नाग॥
जत भूमिक घर करी,
शिरम दीश सों छौ भागधरी।

दूई भाग शीर दीशक त्यागि,
एक भाग पुच्छहुँ केर लागि ॥
दूनू भाग जे मध्य मे रहए,
खात करु ई "डाक" कहए।
एक हाथ क खात करी,
'डाक' भने पूजा कय मरी।

घर छारबाक वचन—

राजा युधिष्ठिर मन्दिर छावा,
सोलह सहस्र ऋषि बुलावा।
हे ऋषी हम पूछी तोही,
घर छावन विधि कह्यो मोही।
कहहि "डाक" पड़िवा मति छावहुँ,
बल सँ कलह काल जगावहुँ।
दुज दशमीते बहुफल होई,
सकल मनोरथ पुरवै सोई।
तीज त्रयोदशि करिय न वासा,
तोघर होवए भोग विलासा।
चौठि चतुर्दशि छाएब छानी,
ताघर होयत बालक हानी।
पाँचे सातै तिथि अगाधा,
गाय महिसि धुरन्धर बान्धा।
छठि आठँ छाएब नर जोई,
स्त्री मरय बहुत दुख होई।

नवमी कहए इअह व्यवहारा;
सो नर खइलौं सदा उधारा।
एकादशी द्वादशी छाएब जहिआ,
ता घर काळ भुजंग मरैआ ॥
दशे पुरुष की दशे नारी,
सो घर रहिलौं सदा उजारी।
कहहि "डाक" जौं तिथि नहि पावी,
ओरिसँ घर बरु बैसि गमावी ॥
पन्द्रह तीसँ छाएब छानी,
ताघर होयत राजा कँ हानी।

घरक समीप अशुभके वृक्ष कथन—

सिमरि तेतरि ओ पुनि तार,
तूति डूमरि अरु बट बिस्तार।
जामून अड़िरी गाछ जौं होए,
"डाक" नाशए पुनि सोए।

शुभाशुभ वृक्षक फल—

सदन समीप नारिअल होई,
गृह बहुत धन पावए सोई।
घर क ईशान पूब ओ पावए,
ताके घर बहु पुत्र बढ़ावए ॥
पूरब दिशा आम यदि होय,
धन दायक 'डाक' कहए सोय।

—तीस—

बेल पनस बदरी अरु नेहू ,
पूरब रहने प्रजा बढ़ धेनू ।
इएह सब वृक्ष दक्षिण जो होय ,
अन धन लक्ष्मी बढ़ाबए सोय ॥
जामुन दाड़िम पूरब आशा ,
बन्धु बहुत ताके घर गाशा ।
घर के दछिन इएह तरु जो होय ,
ताके बहुत मित्रकर सोय ॥
दछिन पछिम पूगी होय ,
ताके बहुत हर्ष सोय ॥
जोँ ईशान दीश ई तरु होय ,
प्रजा बढ़ए बहुत सुख होय ।
चम्पा तरु पूरब जों होय ,
अन धन लक्ष्मी बढ़ि होय ।
तुम्बीफल अरु कर्कारु ,
कुम्हड़ भण्टा सब दिश चारु ॥
लता समीप सदन के होय ,
कबहुने दुष्ट बढ़ाबए सोय ।
बनमँझार जे होय अनेक,
बिटपने रोपीअ करी सविवेक ॥

सदन समीर बिटप वट होय,
धन ताके तस्कर नित खोय ।

--एकतीस--

सोई तरु पुनि नगर मझार,
ताहि सुखद कह "डाक" गोआर ॥
घर समीप सीमर दुख मूल,
तेतरि नाशए धन केर मूल ।
पुत्र नाश करी भीख मँगाबए,
सपनो कहिओ सुख ने देखाबए ॥
सिरिस अशोक कदम्ब सुखदाई,
हरदी अदरख परम सोहाई ।
दहीड़ आओर आमल कीदोऊ ,
शस्य वृद्धि ताके घर होऊ ॥
आगाँ केदली पाछाँ मान ,
बनिता बैसथि माँझ दलान ।
पूरुष सूतथि पीढ़ा पाड़ि ,
एकसर की कर मुड़ी बिलाड़ि ॥

त्याज्य वस्तु—

गोड़कट खाट उटकन छाड़,
नारि कुलच्छनि चाकर चार ।
ई चारू कँ तुरंत परिहरी,
तुम्मा चाड़ि फकीरी करी ॥
शनि रबि फड़की मंगल खाट,
ई तीनू ताकए स्वर्ग क बाट ।
कपटी मित्र कोशलिआ माय,
बुड़िबक बेटा टेटा जमाय ॥

—बत्तीस—

कइहि "डाक" चाहु परिहरी,
बुड़िबक सन शशुरो नहि करी ॥
महतम सौँ मेळ चहिया करी,
कहथि "डाक" जे सन्तापहि मरी ॥

सर्व्यँस क प्रसंग—

खयलहुँ मरी बिनु खयलहुँ मरी,
कहथि "डाक" जे सर्व्यँस करी ॥

॥ इति गृहस्थ प्रकरण ॥

००००

—खेतीक प्रकरण—

बड़द लेबाक प्रसंग—

घुरि घुरि आ दीपक थर जमा,
बारह वर्ष बड़द रह तहामा ॥
नाटा बड़द बेचि कए,
दूई धुरन्धर कीन ॥
अपन खेती करि कए,
आनके मँगनी दीन ॥

नाटा बड़द बहुरिआ जोई,
नहि घर बसए न खेती होई ॥

—तैंतीस—

हलचक्र—

जानि न खसा रविकर वासा,
तासौ तीनि दियौ हरवासा ।

वृषभ विनाश उपजए नहि धान,
पटाएब कि आनन्द किसान ॥

लगना तीनि उपज नहि घास,
यहु विधि लाभ पंच कह आस ।

पलथा तीनि तीनि कहए आनन्दा,
तीनि महादेव सभ सौनन्दा ॥

करहा तीनि उपज नहि धान,
चौपैथ राई ने आन किसान ॥

पड़िया वहे धुरन्धर छठि आठे हर जाय,
चौदह चौठि अमावस अयलो हर बिठाय ॥

साते पाँचे तितिया दशमी एकादशि मे जीव,
एहि तिथि हरके जोतिए ताहि प्रसन्न हो शीव ॥

स्वारो हउ पू पू तेऊ बुशु चंगु वार कहेउ,
एहपासा विधि हेऊ खेती करबाक "डाक कहेउ ॥

बुध बरबार, बिहफे बीज, शुक्र हर जोतबह नीज ॥

याहि नक्षत्रा उगै सूर,
तासो आठ परिहर दूर ।

बारहम सोड़हम बीसम वारि,
शेष नक्षत्रा परिहरि चारि ॥

सर्व्व युक्ति सौं जाएब खेत,
उत्तर दीश सँ धरब सचेत ।

बड़दा जोतब ठीक (ठाड़) कए,
लागन धरब दड़ कए ॥

बड़दक चेष्टाक फल—

बड़दा मूते खेत बढ़ाए,
खसै खेत जोँ बड़द पड़ाय ।

गोड़ा झाड़की मूड़ाझाड़,
तोँ नहि नीक जोँ खसै फार ॥

ईशा टूटए सून हो कोर
लागनि टूटए बड़द लए चोर ।

जूआठ टूटए तोँ शुभ होए
जोँ बैसे कुदे लादे गोय ॥

तत जानी कृषी भल होय
"डाक" कहै छथि निश्चित सोय ।

खुर सिंह सौं माटी लीए
बहुत सुख की मानहि दीए ॥

खेत जोतबाक—

ऊँचे नीचे करी चास,
भाई भतीजे करी बास ।

से छाड़ि कए करइ पचास,
बड़दे कटतहु बड़दक घास ॥

थोड़ क जोतिह अधिक मड़अधिअह ऊँच क बन्हिहह आड़ि ।
जौँ खेत तैयो नहि उपजहुँ "डाक" केँ पढ़िह गाड़ि ॥

छोट छोट घर बान्ही चौघरा,
नामे फार जोताची हरा ।

थोड़े थोड़े बेचि क किनथि माछ,
ताहि घर लक्ष्मी खल खल नाच ॥

सौ छाड़हुँ अरु करहु पचास,
नीच ऊँच क जोतहु चास ।

नितहु खेती दोसरक गाय,
जे नहि देखथि तकरे जाय ।

घर बैसल जे बनबथि बात,
देह मे वस्त्र ने पेट मे भात ॥

धान रोपबाक—

पुष्य पुनर्व्वसु पेहिबह धान
मघ असरेसा कादो सान ॥

रोपनाक—

काशी कुशी चौठी चान,
आब की रोपबह खेत मे धान।
भारे बीआ बोके धान,
आबहुँ बैसह घर किसान॥
आषाढ़ रोपी तान बितान,
सावन रोपी नविकै धान।
भादव रोपी ककोड़ाक कान,
तीनू काटी एक समान॥
बापे पुत्ते करी चास, बापक मुइलेँ माइक आस।
आनक संगे करी ने चास, ने हो अन्न ने गाभरि घास॥

(इति सामान्य प्रकरण)

oooo

वर्षफल

साओन कृष्ण एकादशीक—

साओन कृष्ण एकादशी,
रोहिनि जेतो होय।
तेतो समया जानिए,
खड़ी घसए नहि कोए॥
तिथि बढ़ए तो धान नशावए,
नक्षत्र बढ़ए तो धान उपजावए।

तिथि नक्षत्र होवए समतुल,
पुहमी उपजए तूलम तूल॥
कृत्तिक होएतहु कटिमाटि, रोहिनि होए सुकाल।
जौं मृगशिरा आबि पड़ए, पड़ए अचानक काल॥

साओन शुक्ल सप्तमी—

साओन शुक्ला सप्तमी,
छपिकँ ऊगहिँ भानु।
तौं लगि मेघा बरिसए,
जौं लगि देव उठान॥
साओन शुक्ला सप्तमी,
रैनि होहिँ मसिहारि।
कहए "डाक" सुन भौंडरी,
पर्व्वत उपजए सारि॥
कर खेती पिया भवन मे,
होय निचिन्त रहु सोय।
साओन शुक्ला सप्तमी,
रिमिझिमि बरिसए वारि।
सुनहु पिया निचिन्त भय,
बन्हए ने सारिक आरि॥

साओन शुक्ला सप्तमी,
जौँ बरिसए घहराय।

ता लगि मेघा बरिसहिँ,
पुहमी धूरि मेटाय ॥
साओन शुक्ला सप्तमी,
छपि कैँ ऊगथि भानु।
मूसिन पूछय मूस सँ,
कहाँ करब खरिहान ॥

साओन पछुवा भादव पुरवा,
आसिन बहए ईशान।
कातिक कन्ता सिकिओ न डोलय,
कहाँ के रखबह धान ॥
साओन पछुवा बह दिन चारि,
चूल्हिक पाँछा उपजए सारि ॥

साओन शुक्ला सप्तमी, जौँ गर्जै आधारात,
तौँ जाहु पिआ मालवा, हम जाइब गुजरात ॥
साओन शुक्ला सप्तमी, ठह ठह रैन करन्त,
की जल भेटए गंगतट, की तिय कूप भरन्त ॥
साओन शुक्ला सप्तमी, लुक दय उगए सूर,
हाँकहु पिआ हरदा बरदा, बर्षा गेल बड़ी दूर ॥
साओन शुक्ला सप्तमी, निर्म्मल चान उगन्त,
की जल मिलए समुद्रमे, कामिनि कूप भरन्त ॥
साओन शुक्ला सप्तमी, मेघ न छाजए रैन,
कहहिँ "डाक" सुन 'भाँड़री' बर्षा हो गेल चैन ॥

साओन शुक्ला सप्तमी, गगन स्वच्छ जौँ होय।
कहहिँ "डाक" सुन "भाँडरी", पुहमी खेती होय ॥
कंकड़ भीजहिँ कंकड़ी, सिंह ढ्यारय जाए।
कहहिँ "डाक" सुन "भाँडरी", कुत्ता अन्न न खाए ॥
कंकड़ सुखहि कर्कमे, भीजए सिंह सिआर।
अन्न महगता मे कहहिं, सुन्दर "डाक गोआर" ॥
आदि ने बरिसय आदरा, अन्त ने बरिसय निदान।
कहहि "डाक" सुन "भाँडरी", किसान होयत पिसान ॥

सोम शुक्र अरु बीफै बार,
बुध अमावस पूस मझार।
खेती कय नर सोवहुँ जाय,
उपजए अन्न हर्ष मांहि छाय ॥
रविया रवि सुत ,ओ अंगार,
पूस अमावस कहल "गोआर"।
मूल विशाखा श्रवणा पुरवा,
ई जौँ होय अमावस परिवा ॥
अपन अपन घर चेतहु जाए,
रतनक मोलँ अन्न बिकाय ॥

शाके सम्वत् बर्ष विश्वा, जोड़ि करी एक ठौर।
सातक भागे भाजिए, जे किछु बाँचए और ॥
एक छक्के सम करि जान, सुन पड़य तौँ काल बखान।
जौँ बाँचए दूई चारि, महगो अन्न बेशाहे भारि ॥
तीनि पाँच जौँ बचि जाय, माँटिक मोलँ अन्न बिकाय ॥

पश्चिम बहए तृणहिँ उपजावए,
सम्पत्ति प्रजा बहुत तब पावए।
उत्तर बहए धान्य बहु होई,
ईशान अनावृष्टि कर सोई ॥
शनिवार जोँ रवि परवेश,
धान नाश कर उजड़ए देश ।
मंगल दिवस अग्नि भय होय,
गुरुवारहिँ पुरहितहिँ खोय ॥
बुध परिवेश वृष्टि बहु होय,
शुक्रहिँ अन्न बढ़ावए सोय ।
रवि अरु सोम प्रजा दुख पावए।
परिवेश क फल "डाक" इएह गावए ॥

रवि कुज शनिहो संक्रान्ति, राजा अग्नि घोर भयभीति ।
बुध चन्द्रहिँ जोँ हो संक्रमन, सस्तीकल्यान शोभीतजन ॥
गुरु शुक्रवासर जोँ हो परवेश, धन्य वृद्धि सोँ "डाक" न कलेश॥
दिनमे मेघ रातिमे तारा, कहए "डाक" जे वर्ष गेल मारा ॥
शनि मंगल जोँ हो शिवराति, पछवा बह जोँ दिन ओ राति ।
घोड़ा रोड़ा टिड्डीजोँ उड़ए, राजा मरए की परती पड़ए ॥

जाही होवए छेदा बेदा, ताहि चुमावी गाय ।
ताही होवए दोलाडोली, पुहमी करत लोटाए ॥
रवि शनि मङ्गल बारकेँ, स्वाती नक्षत्र जोँ होइ ।
दीप मालिका ताहि दिन, छत्र भंग फल जोइ ॥

गर्भ श्रवण बहु तियकेँ, पर्वतहुँ गिर जाहिँ,
युद्ध उपद्रव बहुत विध, रोग बहुत सब माहिँ ॥
स्वाती जोँ दीक्षा बरए, विशाखा खेलए गाय ।
नर अचरचे जूझमेँ, अन्न महघ भए जाय ॥
दीप जलए स्वाती दिन, गोधन होए बिराख ।
निश्चय जानहु "डाक" कहह, नाशय उपजय शाख ॥ पाठान्तर
फागुन पूनो दिवस मे, होली दाह जोँ होय ।
वायु बहन के फल कहह, परम विचारे सोय ॥

पुरिवा बहए परम सुख पावए, राजा के मन मोद बढ़ावए ।
दक्षिण बहए परम दुखदाइ, उजड़ए प्रजा महगी भहि छाइ ॥
पच्छिम पवन बहए यदि सुन्दर, समय प्रजा भरिपूर वसुन्धर।
पवन पूर्व यदि बहए सुहाई, किछु वर्षा किछु रौदी जाई ॥
वायु दक्षिणी धनकर नाश, धान नष्टकए उपजए घास ।
उत्तर पवन बहए झड़िजागित्र, पृथिवी पानी अनरथ पाड़िअ ॥
"डाक" कहए यदि चारु वायु, नृपति प्रजा सब जीव जराधु ।
बहए वायु अकाशे आए, महि सर्वत्र संग्राम कराए ॥
मास अषाढ़ पूर्णिमा गहना, ध्वजा बान्हि के देखह पवना ।
पूरब सोँ जोँ वायु चलआवय, उपजय धान मेघ झड़िलावय ॥
दक्षिण सोँ बह मलयानील, मध्य समय जूझए बलवीर ।
पछबा बहए नीक कय जानब, अति उल्लास किछुए भय मानब ॥
उत्तर सोँ उपजए धन धान, धान पान सब खाय किसान ।
जोँ ई ध्वजा रहए मझखण्डा, पड़ए अकाल होलए सब खण्डा ॥

बुद्ध राजा मन्त्री कान, अन्नक सुखेँ चलब उतान। (सुतब पा०)
शनि राजा मंगल मन्त्री, नहि हो धान ने होयए यन्त्री ॥
एक राशि छओ गरहक भोग, ताहि बध बहु पीड़ा रोग।
कहए "डाक" ई गोलक योग, युद्धक कारण इन्द्रहुँ कोँ भोल ॥
चैत त्रयोदशी शनिक योग, नहि हो अन्न "डाक" केँ भोग।
पाँच सूरजहिँ मास तुलाय, ताहि वर्षमे "डाक" लजाय ॥
की अति रौदी की अति वृष्टि, की अति त्रय अति मङ्गल सृष्टि।
फाल्गुन मंगल होए पाँच, पुसहु मे पाँच कुबड़ा (१) नाच।
काल पड़ए तेहि सालहि घोर, "भाँड़रि" सुनइ बात मोर ॥

(१) कुबड़ा = शनि

इति वर्षफल



अथ वर्षा प्रकरण

मेघगर्भ

पूसक अन्हरिआ जतदिन मेह, साओन सुदि ततदिन जलदेह।
माघ सुदि जत दिनमे जान, साओन ततदिन वर्षा मान ॥
माघ बदि मे मेघ देखाय, भादव सुदि तत वर्षा आय।
फाल्गुन सुदि जौँ बादर देख, फागुन सुदि ने "डाकक" लेख।
चैत सुदि जौँ मेघ लाग, आसिन बदि कातिक सुदिमे भाग ॥
जेठ सुदि अष्टमी सँ देख, चारि दिन मन्द वायुक लेख।
गगन सुन्दर घन देखऽ जाय, मेघमे गर्भ कहहु "डाक" बुझाय ॥

दशतारक

मूल आदि भरणी केर अन्त,
चन्द्र बारतैँ गर्भ कहन्त।
कारी घटा गगन में छाबए,
बहए पवन जौँ वृष्टि नहि लाबए ॥
सो दशतारक नीक कहाबए,
वर्षा करकेँ अन्न बढ़ाबए।
जौँ दशतारक वर्षा होअ,
पुहमी घुरि लोटाबए सोअ ॥

मास विचार

कातिक सुदि एकादशी, बिजुली मेघ होए।
"डाक" मास आषाढ़ मे, अति बरषा जल होए ॥

शनि रवि मंगलवार कैँ, कातिक अमावस होए।
आयुष योग पड़ए पुनि, स्वाती नक्षत्र जौँ होए ॥

काल पड़ए तेहि देशमे, अन्न, धन, लोक नसाए।
कहत "डाक" सुन "भाँड़री", बुरहु सगुन इएह आए ॥

कातिक सुदि पुनेकं माँही, नक्षत्र कृत्तिक जौँ पड़ि जाहीँ।
तादिन हो संयोगहि बादर, पुनि पुनि बिजुली चमकय सादर ॥
मास चारि वर्षा कैँ सुनह, भलीभाँति वर्षे मन गुनह।
कातिक मास जौँ दरसे मेह, जपदिन साकर सुनहुँ खेह ॥
सो मेघ बरिसए आषाढ़, सुन "भाँड़री" कहए "डाक" गोआर।

अगहन वदि तिथि अष्टमी, जोँ मेघ दर्शंत ।
ओ मेघ साओनि भरि, कहए "डाक" बर्षंत ॥
अगहन सुदि एकादशी तिथि, द्वादश कातिक राति ।
पौष पंचमी आर सुनू , माघ मासमे साति ॥
ई सब दिन यदि मेघ देखी, चारि मास वर्षा अति पेखी ।
पौष अमावस यदि पड़य ,सोम शुक्र गुरु दिन ।
जल बरषय बहु अन्न हो, प्रजा सुक्त हो रिन ॥
पौष अमावस यदि पड़य,शनि रवि मङ्गल दीन ।
"डाक" अन्नमहगी होवए,जलबिनु तलफय मीन ॥
पौष इजोरिआ सप्तमी, अष्टमी नवमी याज ।
"डाक" जलद देखय प्रजा, पूरय सब विधि काज ॥

पौष वदी सप्तमी तिथि माँही, बिनुजल बादल गर्जत आँही ।
पूनो तिथि साओन के मास, अतिशय वर्षा राखहु आस ॥
पौषवदी दशमी तिथि माँही, जोँ बरषय मेघा अधिकाँही ।
तोँ साओन वदि दशमी, दरसय, ओ मेघ पुहमी बहु बरषय ॥
रविआ रवि सुत ओ अंगार, पूस अमावस कहल "गोआर" ।
अपन अपन घर चेतहु जाय, रसनक मोल अन्न बिकाए ॥
पानी बरसय आधा पूस, आधा गेहुँ आधा भूस ।
पौष अमावस तिथि विषय, होवए मूल नक्षत्र ॥

चारू वायु बहए पुनि, सुनले हओ गृहस्त ।
बाँधो अपनी झोपड़ी, निश्चय लो मनमान ॥
वर्षा अतिशय हो मही, कहए "डाक" परमान ।

माघ वदी सप्तमी के ताहि, जोँ बिज्जु चमकए नभ माहि ।
मास चारहु बरषे मेह , मत सोचहु चिन्ता तजि देह ॥
माघ सुदी पड़िवा के मध्य , दमकय बिज्जु गरजय बद्ध ।
तेल अरू सुरही दिन-दिन भार, महगी होवए "डाक" गोआर ॥

माघ वदी तिथि अष्टमी, दसमी पूस अन्हार ।
"डाक" मेघ देखी दिना, साओन जलद अपार ॥
माघ (१) बरिसय तीनितय, गेहुँ गाय बैमाय ।
माघ द्वितीया चन्द्रमा, वर्षा बिजुली होए ।
"डाक" कहथि सुनइ नृपति, अन्नक महगी होए ॥
माघ तृतीया सुदिमे वर्षा बिजुली देख ।
"डाक" कहथि अओ गहुँम अति, महग वर्ष दिन लेख ॥
माघ सुदीक चौथमे, जोँ लागय घन देख ।
महगी होयए नारिअल-रहए न पानहि शेष ॥
माघ पञ्चमी चन्द्र तिथि, बहए जोँ उत्तर बाय ।
तोँ जानहु भरि भाद्रमे, जल बिनु पृथिवी जाय ॥
माघ सुदी षष्ठी तिथि, यदि वर्षा नहिँ होए ।
"डाक" कपास महगी, मिलय राखए ता नहि कोए ॥

माघक गरमी जेठक जाड़, पहिला पानी भरि गेल ताल ।
कहए "डाक" हम होएब योगी, कुआँक पानीए धोइए धोती ॥
सोमवार दिन यदि पड़य, माघ सुदी तिथि सात ।
"डाक" नृपति मँह युद्ध ताहिँ, प्रजा काल मुखजात ॥
अन्न महग जानहु हे मीत, माघ मासमे खसए न सीत ।

---

(१) माघक बदरी तीनि खाए, गाय गहुम बैमाय । [पाठान्तर]

फागुन सुदि तिथि पञ्चमी, शनि मंगल दिन होय।
"डाक वर्षै महगी पड़ए, बीज न छीटय कोय॥
फागुन अमावस मंगलवार, अन्न संयोगे मनहि विचार।
अवस अकाल पड़य तेहि वर्ष, कहए "डाक" तेजहु मन हर्ष॥

सुदि फागुनक सप्तमी, नवमी तिथि अरु अष्टमी।
ता दिन मध्या जौं मेघा गर्जे, तो अकाल जानहु तू सर्वे॥

चैत मास यदि तप्यय जाए, नहि मेघ नहि विज्जु देखाए।
बहए न वायु अँधेरी पाख, ताकर भल इमि "डाकहि" भाख॥
समय होअ शुभ वर्षा होए, राजा प्रजा सुखी सौं सोए।
चैत अँधरिया पड़िवा देख, जौन वार ताकर फल लेख॥
रविवार तौं आँधी बहए, मंगल विग्रह युद्धहि कहए।
बुधवार हो काल जनावए, शनिवार बहु विपदा लावए॥
सरवर नदी कूप नहि पानी, मानुष चौपद मृत्यु बखानी।
हाहाकार सकल दिश जानू, शनिवार के इएह फल मानू॥
चन्द्र शुक्र वृहस्पति वार, बुध अन्न से भरे भण्डार।
चैत्र वदी पड़िवा फल इएह, सुनलहु जा "डाकहि" कहह॥

चैत्र सुदि अष्टम नवम, वर्षा बिजुली जोए।
जा दिशि अइसहु देखहु, ता दिशि काल पड़ाए॥

चैत अमावस पत्रा देखहु, सूर उदय से जै घड़ी पेखहु।
ते ते सेर बिकाहीँ धान, कातिकमे "डाक" बखान॥
चैत मासक दशमी सुदी, बादर बिजुली देखहु यदी।
जाकर फल इएह नीक होए, एहि विरुद्ध फल शुभ लेहु जोए॥

वैशाख

बादर जौं वैशाख मे, देखि पड़य पचरङ्ग।
अथवा मेघा वर्षहीँ, चमकए बिजुलीके सङ्ग॥
तो चौमासा वर्षहीं, मेघ मही पर जान।
साओन मे उपजए घनो, नाज अनेक विधान॥

होहिँ अमावस जौं शनिवार, अरु रविवारके करहु विचार।
छत्र भंग राजनके होई, "डाक" अवल देखा सब कोई॥
सुदि वैशाख एगारह बारह, अरु तेरह जौं बादर छारह।
अरु बिजुली चमकए बहु ताहि, राज उपद्रव हो महि माँहि॥

जेठ मास अँधिआरी पाख,
ता मह पड़िवा कर फल भाख।
चैत मास पड़िवा फल जइसन,
"डाक" कहए एहु केर फल तइसन॥
जेठ वदी दशमी तिथि पेखहु,
शनिवार के जौं इएह लेखहु।
वर्षा पुहमी पर नहि कोई,
विरले जगमे जीवए कोई॥
पौख वदीमे मेघा धमकय,
अरु बिज्जू ता मे चमकय।
बथय थोड़ चौपद बहु मरहीँ,
"डाक" एकर फल अएसहु भएहीँ॥

सूर्य आसा जहि ठाम , जेठ अमा सन्ध्या समय ।
राखहुँ मनमे ध्यान , जेठ सुदी दुतिया तलक ॥
दुतिआ के चन्दा उगए ; रवि ते पच्छिम मन्द ।
उत्तर ऊँचो होइकेँ , दक्षिण नीचो चन्द ॥
उत्तम फल जाकर लखो , समय होई अति नीक ।
दक्षिण ऊँचो अरु उत्तर , बीच "डाक" नहि ठीक ॥
जेठ पूर्णिमा दिन मे , पच्छी लोटए धूर ।
कहए "डाक" तेहि वर्षमे , वर्षा हो भर-पूर ॥
जेठ पूर्णिमा रातिमे , मेघ भयानक होए ।
किछु किछु पछबा संचरए , महावृष्टि कर सोए ॥
जेठ सुदि तृतीया माँहि , आद्रा ऋक्ष मेघ वर्षाहिँ ।
तौँ दुर्भिक्ष पड़तह एहि साल , कहए "डाक" हो प्रजा बेहाल ॥
माघ अन्हरिआ सप्तमी , घन बिजुली दमकन्त ।
द्वादश मास बरषय जलद , जदा कदा बहुसन्त ॥
जेठ मास जौँ सूर्य तपावए, ।
उष्ण वायु बहु रजहिँ उड़ावए ।
घनहु मेघ वर्षए महि माहिँ ,
जौँ पृथिवीमे नहि समाहिँ ॥
जेठ मास जौँ तपए न सूर ,
शीत माघमे पड़ए न पूर ॥
उपज थोड़, थोड़ जल होई ,
कहत "डाक" मानहु सब कोई ॥

आद्रादिक दशऋक्ष , जेठ सुदी मँह जौँ सरए ।
तौँ भागए दुर्भिक्ष , चारहुँ मास वर्षए घनए ॥
जेठ अन्हरिआ शनि दिन , जौँ न साउमे होए ।
पानि न बरिसए मही पर , "डाक" न जीवए कोए ॥

आषाढ़

वदि आषाढ़के प्रतिपदा , यदि मेघा गर्जन्त ।
पृथ्वी पर मानव लड़ए , निहचै काल पड़न्त ॥
जकर बनल अषाढ़ , तकर बारह मास ।
आषाढ़ वदि एक अकाश , गरजय बिज्जु वायु प्रकाश ॥
तौँ खेती करहु मति कोई , साओन भादहु सूखा होई ।
रोहिन हो दशमी तिथि माँही , तब ही सस्ता धान बिकाहीँ ॥
सुदि आषाढ़ बुध के , शुक्र उदय यदि होए ।
होय अस्त साओन विषय , महा काल पड़िलोए ॥
साओन बहए पुरवैआ , बेचह बरदा कीनह नैआ ।
चौठ अन्हरिया साओन माहिँ , जौँ महिपर मेघा वर्षाहिँ ।
पैंतालिस दिन घन बरसए , साख सवाई बढ़ए मन हरषए ॥
साओन पञ्चमी बरिसए मेघ , चारिमास वर्षा नित नेह ।
सबै सोहावन हर्षित गेह , "डाक" करी नहि किछु सन्देह ॥
साओन अमावस परहि जौँ , सोमवार मे आए ।
उपज अन्न हो थोड़हि, हाहाकार मचाए ॥
कहुँ बरिसए कहुँ सुखहि, मरए जगत बहु लोग ।
फल जाकर कह "डाक" इमि जपसे ज्योतिष योग ॥

भादव सुदि पञ्चमी माँहि, स्वाती रिख संयोग हो जाहिं।
दोऊ शुभ जग मङ्गल करए, सुखी लोक सब कर दुख टरए॥
भादोमे भरणी जब होइ, घटाटोप मेघा नभ जोइ।
तब जानहु वर्षा सब देश, "डाक" सुखी जन मिटय कलेश॥
आश्विन अमावस हो शनिवार, खरभर समय होए विचार।

दक्षिण लौकालौकहिँ, उत्तर गरजए मेह।
कहहिं "डाक" सुन "भाँडरी" ऊँच कय किआरेह॥

मेष सिंह धनु अग्नि करए वृष, कुम्भ कन्या माटी भिजइ।
मिथुना तुला वह पवना, कर्क मीन वृश्चिक जल भरना॥
कार्त्तिक द्वादशि मेघाविशए, ताहि दिशा आषाढ़ बरिसए।
अगहन पँचमी मेघ घटा, भरि साओन कौन मेटा॥
पूस अमावस मेघाकार, बरिसए भादव धोर्आ धार।
माघक सप्तमी मेघ बदरिआ, चारु मास वइजल धरिआ॥
ई सब जौँ एको न देखय, मेघ रसातल मे चल जाय।
कहहिँ "डाक" सुन "भाँडरी", मानुष कुपहिँ पैसि नहाय॥
जौँ मेघा जल बरिसए स्वाती, तौँ लहीन पहिरय सोनाक पाती।
वेद बिहित नहि होयए आन, तुल बिना नहि फुटए धान॥

सुख सुखराती देव उठान, तेकरे तेरहे (१) करह नवान।
तेकरे तेरहे खेत खरिहान, तेकरे तेरहे कोठी धान॥

पानी बरिसय आबहिँ पूस, आधा गहुम आधा भूस।
माघक गर्मी जेठक जाड़, पहिला पानी भरिगेल माल॥
"डाक" कहथि जे हम होयब योगी, कूपक जलसँ धोएत धोबी।

(१) बारहे (पाठान्तर)

जौँ पहिले वैशाख मे जल, आँसुअहिँ होयतहु दोगुन फल।
भादव चारि ओ आसिन चारि, अन्त आदि आठ जोड़ा विचारि।
कहए 'डाक' कराओक वपन, कोठी भरि भरि राखब अपन॥
जा धरि रहथि वीच्छक सूर, ता धरि नविअह चन मसूर॥
शनि रवि मंगल हो शिवराति, हड़हड़ पछवा वह दिन राति।
नदिआक तीरे तीरे करिअह चास, तकरहु रखिअह थोड़बे आस॥
पछवा बहिके बरिसए शीत, ऊँच जोति कए सुनहु निश्चिन्त॥
पहिल पवन पूरब साँ आव, बरिसँ मेघ अति झड़ी लगाव।
चमके पच्छिम उत्तर ओर, तौँ जनिअह वर्षा हो जोर।
पश्चिम दिश जौँ इरिआर मेह, चमके बिजुली वायुक नेह।
वर्षा होअए मूसल धार, सात दिन धरि 'डाक' गोआर॥
जौँ देखी कोदरिकटा मेह, ताहि बीच मे पातक नेह।
जाय खेतमे बान्ही आरि, "डाक" कहै छथि समय विचारि॥
ने ओहि दिन त प्रात दिवस, वर्षा होअए अधिक अवस॥
पच्छिम धनुषा होअए सुखा, पूरब देखाबय जल छय आबय।
दूर भाँड़रि लग जल, लग देखलेँ गेल रसातल।
चैत थर थर वैशाख पाथर, जेठक राति आकाश चकचक कर।
चढ़ितहिँ वर्षा मेघवा भर, कहए "डाक" ऊँच ऊँचकेँ घर भर॥
चन्द्र भाँड़रि मे देखी तारा, वर्षा होअए मूसर धारा।
इन्द्रधनुष जौँ पूबहिँ देखी, नीच ऊँच मे एके लेखी।
जे छन हो रोहिनि परवेश, घनपति इन्द्र धर्म्म जलेश।
जल परित घट रोहिनि परयन्त, कहए "डाक" फल कही तुरन्त॥

धनपति जल जोँ पूरन देख, तरि सावन जल वर्षा लेख।
जब खाली तब वर्षा थोड़, खाली बपलेँ गृह बिछोड़ ॥
पूब दच्छिन पच्छिम घट जल, भादव आसिन कातिक फल।
आबत होँ नहि आदर किए जात न दीन्हेँ हरन।
ई दूनू तबहिँ गए पण्डित आ गिरहस्त ॥
माघ उवन वैशाख जाड़, पहिले वर्षा भरि गेल जाड़।
धोबी धोबए कूपमे पैसि, कहए "डाक" देहरि पर बैसि ॥
जेठ पूर्णिमा दिन मे पछो छोड़ए धूर,
कहथि "डाक" तेहि बर्षमे वर्षा हो भरिपूर।
जेठ पूर्णिमा रातिमे मेघ भयानक होअ,
किछु किछु पछबा सञ्चरए महावृष्टिकर सोअ ॥
जेठ तपए, अषाढ़ नवय ॥
शुक्लपक्ष ओ नवमी के वार, मास अषाढ़क कहओ विचार।
भोर झड़ी सुखा करबावए, पहर तेसर बान कहावए ॥
मध्य झड़ी धान उपजावए, सूर्योदय मारी दिखलावए ॥
बीफे शुक्रक बादरी, रहए शनीचर छाय।
कहए 'डाक' सुनु 'भाँडरी' बिनु वर्षे नहि जाय ॥
शनि सतहिआ रवि बतहिआ ॥
अषाढ़क पछबा सोना बहए, सीक बोले मही भरए।
रोहिनि तब्बए मृगशिरा तब्बए, आर्द्रा देख भुसुआए ॥
कहए "डाक" सुनू सज्जना, कुकुरो अन्न नहि खाए।
धान पान के नित्य स्नान, कहए 'डाक' ई निश्चय जान ॥

अषाढ़ नवमी शुक्ल पखा, की कर पण्डित लेखा जोखा।
बरिसए मेघ जोँ मूसर धार, साँझि समुद्र मे बगड़ा चार ॥
जोँ मेघ बरिसए फुहीँफुहीँ, मत्स्य वृद्धि हो 'डाक' कही।
मन्द मन्द जोँ बरषन कर, अन्न वृद्धि सोँ पहुमी भर ॥
सिहक माथे पछबा बहय, तकरहु मानिअह डर।
कहहि 'डाक' सुनू 'भाँडरी' ऊँच कय बान्हह घर ॥
जोँ असरेसा घुमकी लावए, मघा निरावे भारू पावए।
जोँ पुरबा पुरबैया पावए, सुखले नदिआ नाव बहावए ॥
साओन पच्छबा भादव पुरबा आसिन बहए ईशान।
कातिक कन्ता सिकिओ नहि डोलय कहाँक रखबह धान ॥
साओन पछबा बह दिन चारि, चुल्हिक पाछोँ उपजए सारि।
बरिसे रिमझिम निशिदिन वारि, कहि गेल 'डाक' वचन परचारि ॥
साओन पुरिबा भादव पछबा, आसिन बहय नैर्ऋत।
कातिक कन्ता सिकिओ न डोलय, उपजय नहि भरि बीत ॥
साओन पुरिबा बह विकरार, कोदो मडुआक हो व्यवहार।
खोजत भेटय नहि थोड़ो अहार, कहत बैन इएह 'डाकगोआर' ॥
जोँ साओन पुरबैआ बहए, शाकी लागु करीन।
भादव पछबा जो बहए, होहिँ सकल नर हीन ॥
साओन बह जोँ बड़दहासा, बीआ काटि करह गे घासा ॥

॥ इति वर्षा प्रकरण ॥

अथ गृहस्थधर्म प्रकरण

चपन—

मंगल के ओ आरे पारे, केश कटावी कहि गेल गोआरे ।
शनि मंगल के आरे पारे, केश कटावी कहिगेल गोआरे ॥
केश कटावी बापे पूत, नहि कटावी बापे पूत ॥
जहिखन भेटए नाउ, तहिखन केश कटाउ ॥

नव वस्त्र परिधान—

कपड़ा पहिरी तीनि दिना, बुध बृहस्पति शुक्र दिना ॥
शनि जारए रवि फाड़ए, सोम करए सुडाह ।
‡ मंगल मारए जीव सोँ, बुध पहिर घर जाइ ॥
नँगटे पहिरी सुख लँ खाई, जहाँ मन आवए तहाँ जाई ॥

नवान—

पूर्वार्द्ध बीच राशि मे पाव, माघ फाल्गुनक शुक्र सोहाव ॥
१। ६। ११। १३॥
कृष्णहुँ मे पंचमी धरि होअ, नन्दा त्रयोदशि छाड़ए सब कोअ ।
सुन्दर तिथि, शुक्रा छोड़िवार, मृदुचर क्षिप्र नक्षत्र आधार ॥
जन्मक तेसर तारा हरिशयन; धनु तुल मे नहि करी नवान ॥

‡ छन्दोग के "सामगानां कुपाकरः" वाक्य अछि तेँ मङ्गलकेँ दोष नहि थिक, ओ वाजसनेयी के रवि केँ दोष नहि थिक ।

नग बन्ध—

† सुतब उठब पाँजर मोड़ा, ताहि बीचमे जन्मक छोँड़ा ।
राजाक बेटा रामलाल, आठ नओमे 'डाक' बेहाल ॥
सतहाक चौदह सतहीक आठ, अन्न त्यागिकए जीवन काट ॥

मन्त्र-ग्रहण—

चैतहिँ दुःख वैशाखमे सिद्धि, जेठ मरण आषाढ़ बन्धुनाशकबुद्धि ।
साओन पुत्र भादब दुःख देह, सर्वसिद्धि आसीन कातिक ज्ञानदेह ॥
अगहन शुभ पूस ज्ञानक नाश, माघ मेधा फागुन विजय प्रकाश ।
कृष्णपक्ष पञ्चमी परयन्त, एहि सँ आगाँ वांछित अन्त ।
शुक्लपक्ष मे इच्छित सिद्धि, शुभकारक द्रव्य कहओ वृद्धि ॥
दु ती पा सा दस एगारह, कहथि 'डाक' ओ तिथि ओ बारह ।
रिक्ता तिथि केँ छोड़वे करी, शेष तिथि मध्यम मानि धरी ॥
अस्थिर मृग चित्र अनु ओ रेव वसु नक्षत्रँ मन्त्र लए लेब ।
शनि कुज छाड़ि सुन्दर शुद्ध काल, चंद्र तारा लय शिष्य बेहाल ॥
सुन्दर दिन मे गुरु प्रवि नाय, मन्त्र लेथि कह 'डाक' बनाय ।

मैत्री—

पुष्य चन्द्र मित्र भाग नखता, द्वदश मे शुभ वार लिखत्ता ।
अष्टमी तिथि थिर होएब लग्न, मैत्री करलेँ हो नहि भग्न ॥

॥ इति गृहस्थधर्म प्रकरण ॥

† सुतब = हरिशयन, उठब = देवोत्थान, पाँजरमोड़ा = पार्श्व परिवर्तन, रामनवमी, जन्माष्टमी, शिवरात्रि, महाष्टमी ।

यात्रा प्रकरण

उजड़ल बसयह पूछयह ककरा, कौन दिन कोन मुंह करयह जतरा।
भदवा के नहि जाति ने पाती, दक्षिण उत्तर दूपहर राती ॥
पुरब गोधुली पश्चिम उषा, कहहिँ 'डाक' से सुखहिँ सुखा।
शनि रवि मंगल श्रो गुरुवार, दक्षिण पवन करथ सँचार ॥
सोमे शुक्रे बुधे बाम, एहि विधि लङ्का जीतल राम।
शनि मंगल भोजन कय चलयह, गेलहु लक्ष्मी पलटि कए अयबह ॥
सोमे बुधे शुक्रे उषा, छाड़ह जोतिषी लेखा जोखा।
जोइ स्वर चलए सोइ पद दीजय, कानहु सँ एक टकर लीजय ॥
पड़िवा नवमी शनि सोम श्रवणा, पूरब दिशा नहि करिअ गमना।
अश्विनि पञ्चक बाण गुरु तेरह, ई सब जानि दक्षिण जनि हेरह ॥
रवि छठि चौदसि भरणी पुरुख, पश्चिम के थाक इएह बड़ दुरुख।
कुज बुज दशमी बुध श्रो हस्ता, उत्तर गमने मरण अवस्था ॥
कहहिँ 'डाक' गमन ने करी, नाशहिँ प्राण कोटि विधि धरी।
रवि मूले जे पाबी श्रङ्का, सोमे श्रवणा बजाबी डङ्का ॥

गमन काल जोँ बाम दिश, श्यामा बोलए भूप।
गोह सूर श्ररु सर्प के, दर्शन परम अनूप ॥
पुर पइठत जोँ बाम ते, तीतर दक्षिण जाय।
कहए 'डाक' शुभ सकुन इएह, मिलिहैँ सब मन भाय ॥

बाम भाग मे बोलए गीदर मन वाञ्छित फल पावहुं शीघर।

संमुख दहिन जोँ बोल सिआर, तहाँ अशुभ कहए 'डाकगोआर' ॥
निशा राति चहुँ दिशि जोँ बोलए, अशुभक द्वार तुरन्तै खोलए।
रोगी रीछ सुनारक दर्शन, बामहि मलान दाहिन प्रशन ॥
नीलकण्ठ केर दर्शन होए, मन वाञ्छित फल पावए सोए ॥

बोलए खरहा बाम दिश, मीठो बैन सुनाय।
फल यात्रा सब शुभ लखो, अन्न धन देहि मिलाय ॥
दाहिन बोलए भय करे, आगे रोगहिँ नाश।
पीछे बोलए गमन कर, तेजहुँ मन से आश ॥

प्रात समय मृगा बाएँ सँ, दाहिन जाइत जोँ दरसए।
साँझ समय दाएँ सँ बाएं, मन वाञ्छित फल निश्चय पाए ॥
दहिथा लौंग पक्षी विशेष, दाहिन दर्शन पुण्यहि लेख ॥
वाञ्छित फल तत्क्षण सब पावए, कहत 'डाक' इएह फल मनभावए।
नकुल मोर दर्शन शुभकारी, 'डाक' हे सज्जन लेहु विचारी ॥
कोकिल मुर्गी सुग्गा कही, चौथे मैना सुनहुँ ऐ सही।
बाएँ बोलए तो शुभ होई, 'डाक' कहए मनमे लेहु जोई ॥

गमन काल मे श्वान यदि पटपटाय कान।
'डाक' कहथि जे प्राण बचए सूकर एलबे मान ॥
मानव महिष मजार द्वय श्वान युग्म श्रो चोर।
ठढ़व देख यदि मार्ग मे 'डाक' कहथि तोँ फीर ॥
विप्र तीनि पुनि क्षत्री चारि शूद्र एक रस संख्यक नारि।
'डाक' बचन मन ई सुन धारि वैश्य दुई भाएहुँ सोँ मारि ॥

दहिथा = दही। लौंग = लवङ्ग।

यात्रा काल नकुल यदि देखी नाशल काजकेँ सिद्धे पेखी ।
गमन समय मे काक यदि वाम भाग मे देखी ।
यश कार्य सिद्धि होए अगनित धन पुनि लेखी ॥
गमन काल मे बहए बसात विघ्न बाधा सभे नसात ।
सुन्दर शिशु सुत युवती नारि भरल कुम्भयुत हो पनिहारि ।
अथवा क्षेमंकरी मृदुभाषी पुस्तक हाथ विप्र गृह बासी ॥
दधि कोकिल पुनि लावा ओ मीन, ई सब नहि छथि यात्रा हीन ।
लगहरि गाय बिआयधि बाछा, विघ्न दोष सब बिसरू पाछा ।
'डाक' अमजानी ई देखि, शुभ यात्रा कहथि सब लेखि ॥
चलत मार्ग मे तुरग मृग दहिन वाम से जाय ।
'डाक' मनसि चिन्ता तजी धन यश वार्ता पाय ॥
अजा एक अरु श्वान षट् वृषभ एक गज सात ।
तीनि धेनु पञ्च महिस से यात्रा शुभ न लखात ॥
प्रात बाम दिस सिरीर बाजए, पहर दुई तेँ दाहिन गाजए ।
बचन मानि 'डाक'क बड़ भाई, गमन करी कुशल सोँ जाई ॥
ललुआ कारी पच्छी श्वान, गर्दभ गीदर वापस जान ।
बामहि भय 'डाक' जोँ चलए, धन यश इच्छा तीनु मिलए ॥
मंगलक उषा बुधक प्रात, यात्रा करी 'डाक'क बात ।
रवि शुक्र मंगल उषा जानी, आन सबहिकेँ फूसि मानी ॥
मास नखत्र ओ तिथि वार, अतदिन तासक जोड़ि करी विचार ।
जोड़ल अंक मे सातक भाग, शेष अंक फल कहथि 'डाक' ॥
एक बाँचय तँ शुभ फल दीअ, दुइ बाँचय तँ लाभ लय लीअ ।

तीनि बाँचय तँ शत्रुके क्षय, चारि काज सिद्ध पाँच संशय ॥
छओ मे मृत्यु शून्य हो दुःख, नीको दिनक यात्रेँ नहि सुख ॥
सापक बीआरि स्त्रीक रज, वैद्य लवण देखि यात्रा तज ।
अपन घर जोँ धहधह जर, छिक्का हो वा पाग खसि पर ॥
कारी धान जोँ गुर्विणी कान, ई असगुन सब 'डाक' जान ॥
रवि के पान सोम के दर्पन, मंगल किछु किछु धनिआ चर्वन ।
बुध मे गुड़ बृहस्पति के राई, शुक्र कहए जे दही सोहाई ॥
शनि कहए मोहि अदरक भाव, सकल काजकेँ जीति घर आव ।
ने शुनि भदवा ने दिग्शूल, कहथि 'डाक' ई अशुभ समतूल ॥
गामक ठकठक बासक बान, हाथ मुँह दए चिहुना कान ।
ताहू सोँ जोँ भेटए मसहारी, की होइ राजा की अधिकारी ॥
बामे फनिपति दाहिन सिआर दही लएह दहीलएह कहए गोआर ।
तकरो आगाँ जोँ भेटए मलाह, देखि मीन करी परम उछाह ॥
की होइ राजा की होइ दीवान, कहहि 'डाक' जे परम सुजान ॥
बड़दा बनचर भरल बैल, बेश्या राजा देवता शैल ।
कहहिँ 'डाक' यात्रा करु जानि, गेलहुं लक्ष्मी देतहु आनि ॥
भरती सँ खाली भला, जोँ जल भरने जाय ।
कहहिँ 'डाक' सुनू भाँडरी', यात्रा अति सुखदाय ॥

बेहरीक खटखट नगरक बाजह चिलकाक कोर महतारि कान ।
ताहू सँ आगाँ भेटए तेली, एक पैर नहि आगाँ पेली ॥ (पाठान्तर)

कनकट बुचकट काटल केश, बाट चलैत जोँ लागय ठेस।
केओ पूछए जाएब कतए, भेल काज बिनाशय ततए॥
खाटक खटखट पुष्पक बान, बाट बैसल जोँ बृद्धि अकान।
तीनि कोश पर जोँ भेटए तेलि, विधवा ब्राह्मणी मिलए अकेलि॥
तापर भेटए बिप्र जोँ काना, ब्रह्म टेक धार बचए न प्राना।
नग्न भग्न गुरुबिणी जोई, खट फकसिआर जोँ आगाँ होई॥
सुखे हाड़लए श्वान जोँ चाभए, कहहि 'डाक' जे मरण देखाबए।
फुटल घैल ओ टुटल खाट, बाट चलैत ब्याल काटल बाट॥
यात्रामे जोँ खसए पाग, ई सब ताकथि स्वर्गक बाट॥
खेत भिखारी गाम सराउ, फेरि पलटि अपन घर आउ।
काटल कपचल थकड़ल केश, बाट चलैत जोँ लागए ठेस॥
बामन मे जोँ भेटए कान, ब्रह्मलोक धरि बचए न प्रान॥
उजड़ल बसबह जएबह कोन भाति, दिनमे पूरब पच्छिम राति।
गोधुलि दक्षिण उत्तर ऊषा, कहए 'डाक' ई सुखमसुखा॥

॥ इति यात्रा प्रकरण ॥

अद्भुत प्रकरण

कमल गाय घोटक गज साप, खासय सुन्दर भूमि पर आप।
खञ्जन बैसल देखी राज, 'डाक' कहथि जे कुशल समाज॥
भस्महि बैसल अरु नखकेश, भुस्सहिँ देखि ने दुःख कलेश।
ऊपर देखने धनक बृद्धि, पूब कहै छथि कारज सिद्धि॥

अग्नि कोन मे बहुभय होअ, दक्षिण देखने अग्नि उड़ोअ।
नैऋति देखने झगड़ विशेष, पश्चिम देखने धन अशेष॥
सुन्दर बस्त्र सुगन्धित जल, बायब देखने ई सभ फल।
उत्तर देखने सुन्दरि नारि, ईशाहिँ मृत्यु कहहिँ पुकारि॥
एहि विधि पल्लीक बजयो जान, छिकहुँ मे कह 'डाक' बखान॥
दक्षिन छीके धन जए छीजए, नैऋत कोन सिंहासन दीजए।
पच्छिम छीके मीठ भोजना गेलहुँ पलटए बायब कोना॥
उत्तर छीके मान समान, सर्व सिद्धि लए कोन ईशान।
पूरब छिक्का मृत्यु हकार, अग्निकोन मे दुःखक भार॥
सबकेर छिक्का कहि गेल 'डाक', अपनै छाकहिँ नहि कछु काज।
आकाशक छीकेँ जे नर जाय, पलटि अन्न मन्दिर नहि खाय॥
कार्यारम्भ मे छीके कोई, सुनकर मन्त्र विचारहु सोई।
नापो पाएरक छाया अपन, अंगुली से गिन लेहु मनेमन॥
ता, मे तेरह आओर मिलाउ, सखन आँठहि भाग लगाउ।
भाग देइकेर शेष जो बाँचए, कहल 'डाक' ताकर फल साँचए॥
एक बचए तोँ लाभ बुझाबए, कार्य सिद्ध दुइ मोँह जनाबए।
तीनि बचए तोँ होवए हानी, चारि रहए तोँ शोक बखानी॥
पाँच रहए भयकाँ उपजाबए, छओ बचए तोँ लक्ष्मी आबए।
सात बचए तोँ दुःखहिँ जाना, शून्य शेष सँ निष्फल माना॥
पदछाया केर इएह बिचार, सुन 'भाँड़रि' कह 'डाक गोआर'॥
पृष्ठ बामसे छिक्का सुनी, कुशल कार्य सब सिद्धी सुनी।
सन्मुख छीक कलह बढ़ाएब, दाहिन वित्तक नाश कराएब॥

अपन छींक सबसँ भयकारी, द्रव्य नाश विपत्ति दुखकारी।
सरदी सुँघनी बलक छिंका, 'डाक' कहथि ई सब फिका॥
पक्षी खसए जोँ सरटा चढ़ए, एहि विधि फल 'डाक' पढ़ए।
मस्तक खसए तोँ राजश्री होइ, भालहिँ ऐश्वर्य्य कहए सबकोइ॥
कानहि खसने भूषन लाभ, आँखि पर खसने बन्धु मिलाप।
नाकपर खसने सुगन्धि देआबए मुखपर खसने मिष्टान्न खोआबए॥
कण्ठहिँ श्री हो धाबाधाइ, बाहु पर खसने विभव बधाइ।
बाहुमूल मे होए समृद्धि, हाथ दुइ पर धनक वृद्धि॥
स्तनमूल मे शुभर भाग, हृदयमे खसयतोँ सौख्य सोहाग।
पीठपर खसयतोँ पृथ्वी प्राप्ति, पाँजरहिँ खसने बन्धु मिलाप्ति॥
डाँड़ पर खसय तोँ लाभ होय वस्त्र, गुह्यमे खसने मृत्यु अवश्य।
जाँघपर खसने धनक हानि, गुदमार्गहिँ रोगभय आनि॥
ऊपर खसय तोँ वाहन आव, जानुजंघमे धन चल जाव।
पाएर पर खसने रटना होअ, कहथि "डाक" एहिविधि फलहोअ॥
एहि पक्षी चढ़ू नरतन जाय, सरट खसए जोँ ओहि विधि आय।
फलहुक उलटा करितहुं जानि, "डाक" कहै छथि युक्ति बखानि॥
रातिमे जोँ पक्षी चढ़ए, सरटक खसने "डाक" पढ़ए।
मरन निमित्तक होवए सोई, नहि तोँ व्याधि अवश्य होई॥
खसितहिँ यदि ऊपर चढ़ि जाय, खसने नीक चढ़ए ने सोहाय।
छाया जोँ दक्षिण दिश देखी, दुइ शिरछायाक देखने लेखी।
छाया देखी मुण्डविहीन, चन्द्र सूर्य दुइ राति ओ दीन॥
दुहू बिम्बमे छिद्र देखाय, उदय अस्तमे दुष्फल आय।

पाँज सोँ पकड़य स्वप्न मे प्रेत, अथवा देखलहु होअइ सचेत॥
वज्रपात होय जाहि घर, उल्कापातहु भानहु डर।
कच्छ मत्स्य जोँ वर्षन होय, इन्द्रधनुष निशि देखल जाय॥
अरुन्धती जे देखथि नहि, माथहि मिट काक बैसू अपनहि।
देखी जोँ ई सब उत्पात, करी पवित्र गंगहि निज गात।
दश सात पाँच पन्द्रह दिन आँट, 'डाक' तर्के कथि दक्षिण बाट॥
देवता बाभनक पूजा करी, ताही पुण्यैँ बचबो करी॥
अधिक क्रोध होवए अति डर, से जन बर्षक पुरिलए मर।
अचके मोट वा पातर देह, वर्ष बितैतेँ यमक गेह॥
देवता पण्डित गुरु ‡भूदेव, माय बाप जोँ राजहिँ सेव॥
एहि सातोक निन्दा कर, कहए 'डाक' बर्षहिँ यमघर॥
दीपगन्ध † अरुन्धती तारा, नहि लागए देखने बेचारा।
'डाक' कहए सुनु 'भाँड़रि रानी' जाथि यमकघर वर्षहिँ मानी॥

जन्म लग्न सँ मंगल सात, चन्द्रहुँ सँ जनिअह ई बात।
विधवा होइतिह से कुमारि, कहए 'डाक' ई मह विचारि॥
सातम सूर लग्न स जकरा, कहए 'डाक' पति छाड़ए तकरा॥
सातम शनिकेँ पाप जोँ देख, कन्या धरतहु लम्पट वेश॥

---

‡ भूदेव = ब्राह्मण।

† संस्कृत मूल –
दीपनिर्वाणगन्धञ्च सुहृद्वाक्यमरुन्धतीम्।
न जिघ्रन्ति न शृण्वन्ति न पश्यन्ति गतायुषः॥

काक चेष्टा विचार—

तनु अति कारी बड़का लोल, पैघ काक अति ऊँचे बोल।
ताहि काक कें बाभन जान, कहथि 'डाक' जे आन नहि मान॥
पिंगल आँखि नील रङ्ग ठोर, सब देह कारी क्षत्री सोर।
पांडु नील रङ्ग चोंच ओ देह, कहथि 'डाक' जे वैश्य कहि लेह॥
असमक रङ्ग ओ दूबर शरीर, करकर बाजए रह नहि थीर।
ताहि 'डाक' कह शूद्र पुकारि, एहिसँ आन थीक अन्त्यज झारि॥
पाँचो मे मुख बाभन जान, असगुन सगुन तकरे जान।
जौं मांस बोकरए आगाँ आबि, कहथि 'डाक' जे धन पाबि।
आगाँ लाबय माँटिक ढेप, भूमि लाभ हो ताही खेप॥
रत्न आनि जौं राखय अग्र, कहथि 'डाक' जे राज हो समग्र।
काक द्वार मे आबय जाय, कहथि 'डाक' जे पाहुन पाय॥
जूता छाता शस्त्र सवारी, छाया अंग नोंचे काग कारी।
स्वामी मृत्यु देखावय काक, फूल चढ़ओने पूजित हो 'डाक'॥
असमय तीनि दीन सँ ऊपर, जाहि देश वर्षा हो भूपर।
देशक प्रधानक होय मरन, कहथि 'डाक' आउ ईशक शरन॥
आब राति जौं असमय वृष्टि, ताहि देस मे इन्द्रक दृष्टि।
स्वर्गधाम कें राजा जाय, कहए 'डाक' कए निश्चय भाय॥
असमय बरिसय झरझर बादर, समय मे होए मेघवा कादर।
सकल प्रजागण रोगें पूर, भयक कारणें 'डाक' भेल चूर॥
प्रतिमा हँसए ओ मूने नैन, रोदन करए बाजए बैन।
धूआँ उठए ज्वाला देख, अति भय होय देश मे लेख॥
सकल देव प्रतिमा मे जान, कहथि 'डाक' जे हाय नहि त्रान॥

बिन कारण जौं अंगक भंग, प्रतिमा चल तनु वामक सङ्ग।
नेत्र सँ नीर जौं झुकना जाय, प्रतिमा बाजब सुनलौं जाय।
कहए 'डाक' निश्चय भूपाल, देशक राजा मरब ओहि साल॥
कुकुर बिड़ारि जौं बन जाय, बनक हरिना गाम देखाय।
गगनहि गीध घूमि के आबि, भवन भीति वैसय सुख पाबि॥
गदहाक सन मुह नेनाक उपज, घोड़ा भैंसा खचर अज।
अनेक रूपक मनुष बिआय, देव प्रतिमा खसल देखाय॥
जाहि देश मे ई सब उतपात, देश छाड़हि कें भागह परात।
कहथि 'डाक' सब तरहें दुःख, ओके खपतहु लोकक सुख।
कौआक बीचमे कुकुर बाज, राति दिन जौं हुएह समाज।
कहथि 'डाक' सुनु 'भौंडार रानी'; ओहि देशमे भय अति मानी॥
मुख्य घरमे काकगन पएसल, बजितहिं गिदरा भोरहिं बएसल।
गगनहि गिद्धक मुण्ड मँड़राय, अति भय 'डाक'कें शीघ्र देखाए॥

गीदर दिन मे बोलही, काग निसि मे बोल।
कहए 'डाक' पड़ए काल तब, निश्चय घर-घर डोल॥

नेनाक दन्त जन्मक प्रसङ्ग

पहिनहि ऊपर जन्मल दाँत, बापहिं खएतहु अथवा मात।
दाँत लेने जन्मए बाल, माय बाप ओ 'डाक'क काल॥
सबकें खाए अपनहुँ नहि बाँच, कहथि "डाक" तें सुभाव आँच।

श्वानचेष्टा विचार

दहिन पाएर सँ श्वान यदि, अग्र निम्न कुड़िआबए।
उदर माथ आ कण्ठ गुद, सुखद राज्य धन पाबए॥

हृदय नासिका कर्ण युग, नेत्र पृष्ठ ओ भूमि।
फल सुखदाई हो एकर, "डाक" कहै छथि जूमि॥
दक्ष अंग सब वाम पग, खजुआयब यदि श्वान।
फल जानी पुनि अपशकुन, "डाक" कहथि परमान॥
श्वान करए क्रन्दन जहाँ, लोटए भूमि पर जाए।
"डाक" कहथि निश्चय तहाँ, आबए विपदा धाए॥

॥ इति अद्भुत प्रकरण ॥

ग्रहण

रवि सँ चन्दा सात मे, राहु सँ हो एकन्त।
तखन गहना लागिए, कथी लए खड़ी घसन्त॥
जाहि नक्षत्रे रवि तपे, ताहि अमावस होए।
किछु किछु पड़िया सचरए, सूर्यपर्व तब होए॥
एक मास जौं दुइ गहन, घोर युद्ध भूपति कें तखन।
जलवर्षा नहि होयत साल, "डाक" कहैछथि सुनु भूपाल।
पहिले सूरज पाँछा चन्द, गरहन्त लगलें "डाक" अनन्द।
पहिले चन्दा पाँछा सूर, गरहन्त देखलें रोगे पूर॥
गृहपति घरनी कलह घोर, कहए "डाक" सुनु कहल मोर॥

प्रश्न प्रकरण

पुर्वाविहार श्रोताक नामाक्षर, तिथि दिन मास नक्षत्र एक कर।
रावणक मुहें भाग करु, शेष अंक सँ फल उचारु॥

सात पाँच तीनि मंगल बात, नवो एक सिद्धि हाथे हाथ।
छओ चारि मे कार्य विफल, दुइ आठ नाशेँ काज सकल॥
प्रश्नकर्ताक नाम जत अक्षर, जतबा मात्रा फराक कय धर।
अक्षर दोगुन चौगुन मात्रा, सब मिलाय करी एकत्रा॥
तीनि अङ्क सँ भाग कए देख, शेष बाँचए फलक लेख।
एके शीघ्रे दुइ फल मे देर, शून्ये नाशे "डाक"क फेर॥
जत मास गर्भ नारिकेँ नाम, जत जन बैसल छथि ओहि ठाम।
जोड़ि अक्षर सब हो जत अंक, साते हरने बाँचए जे निटंक॥
'डाक' कहए एक दुइ ओ पाँच, बाँचए पुत्र करबिअह नाच।
एहि सँ आन जौं बाँचए आबि, कन्या देखलें बड़ दुख पाबि॥
गाम नाम ओ गुर्विणी, नाम अक्षर एक फल।
"डाक" जोड़ै छथि एक कय, तीनि भाग जे बाँचल॥
एक पूत दुइ कन्याक आस, शून्य बाँच तँ गर्भक नाश।
प्रश्न फल जौं उलटा देखी, स्वामीक गर्भ मे संशय लेखी॥
अक्षर दोगुण चौगुन मात्रा, नामे नामे करी एकत्रा।
तीन अंक सँ भाग करी, भाग शेष सँ उत्तर भरी॥
एके शून्ये पहिलें पति, दुइ रहय तँ जाय युवति।

वनस्पति प्रकरण

वृक्ष रोपबाक

का 'डाक' तौं सुनह रावन, केरा रोपी अषाढ़ सावन।
ती सए साठि जे केरा रोपए, आबि निचिन्त घरहि भए सुता॥

केरा रोपी काटी नहि पात, केरे देतहु थोरी भात।
फागुन केरा रोपल जाय, मास मास फड़ बैसल खाए॥
फागुन केरा ई चुत चैत, कातिक ओन कहि तार।
तीनि बिलसे तेरह हत्थे, तीनि मासे तीनि दिने॥
भादव भदवा सीमी बारि, केरा रोपी दिन विचारि॥
जौं नहि बरिसए अगहन मेघ, कटहर गाछ कैँ होए घेघ।
कहथि 'डाक' जौं होए पानि, टुटल ठारि कह गाछ बानि॥
गूआ गोवर बाँसहिँ माँटि, बाँफ नारिकेरि सिककठि काटि।
ओलमे कुरकुट छौँहैँ मान, बढ़ए फलए ई "डाक"क गान॥
डुमरी पीपरि पाकड़ि बड़, असमय फुलए देखि पड़।

विविध प्रसङ्ग

बाभन कुत्ता हाथि, तीनू जातिअहिँ खाथि।
कायथ कौआ रोड़, तीनू जाति बटोर॥
सए मे एक सहस्र मे काना, सवा लाख से ईँचा ताना॥
ईँचा ताना कहए पुकारि, हम मानल कुहरा सँ हारि॥
खिचड़ी सङ्ग जे मछरी खाए, गुहला बहुक नैहर जाए।
बाट चलैत जे गाबए गीत, कहए 'डाक' ई तीनू पतीत॥
बासी ठकनहि भाथ तिले, कहिगेल 'डाक गुआर'।
चैत तुए तीनि लए मोए, कहहिँ 'डाक' रोगी होए॥
दिनमे बदरा रातिमे निबदर, बह पुरबआ हबर हबर।
कहहिँ 'डाक' बिआ जनु खोअह, धानक खेतमे राइहि बोअह॥

प्रकीर्णाध्याय

मड़द कीनबाक प्रसङ्ग

बएल कीनए जाइछ कन्ता, कएल गोल के न देखह दन्ता।
चरक कसौटी सडरा बान, एहि छाड़ी जनु किनह आन॥
ओहि पार मे देखिअह मैना, एहि पार सँ फेकिअह बैना॥
तीतए पंखी बादरा, विधवा कज्जल रेख।
ओ घर करए, ई बरिसए एहि मे मीन न मेष॥
शनि रवि फरकी मङ्गल खाट, ई सभ ताकए स्वर्गक बाट।
साठी उपजय साठि दिना, जौं मेघ बरिसय राति दिना॥
धनमे धान आओर धन गाय, किछु किछु सोना आओर सब छाय।
बरदा बढ़ए तँ अपनहुँ बढ़ी, नहि थहि होए तँ बैसलो रही।
जे कहए हर बहए कहाँ, कहथि 'डाक' घंटो नहि सहाँ॥
हर बहए जे सङ्ग सङ्ग बही॥
निचह खेती दोसरहि गाय, जे नहि देखए तकरहि जाए॥
काँची कुथी वैश्या घालए, ब्राह्मण घालए दासी॥
.... चोरहिँ घालब चकासी॥
मोट दतमनि जे करए, नित उठि हरड़ा खाहिँ।
दूध सलाका जे पिबए, ता घर वैद न आँहिँ॥
खाएक मूती सूती बाम, वैद्य अनएबाक कोनो ने काम।

—सतारि—

महतो सँ पछिया मेल धरी, कहए 'डाक' सन्तापहि मरी ॥
पछबा सँ उघड़ए मेघ, विधवा करए सिंगार।
ओ उढ़इए ओ बरिसए, कहि गेल 'डाक गुआर' ॥

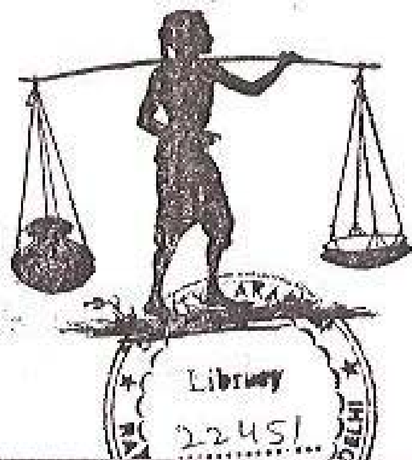
वर्ग विचार—

अ इ उ ए गरुड़; क ख ग घ मजार।
च छ ज झ सिंह; ट ठ ड ढ स्यार।
त थ द ध नाग; प फ ब भ मूस।
य र ल व हाथी; श ष स ह मेष ॥

योगिनी विचार—

पत्ती पथा खस्सा दोआ, नवे नवे योगीन होआ ॥

—:0::0:—



शब्दार्थ-संग्रह

(अ) अचके—अकस्मात्
अज—बकरी
अवरल—आर
अनु—अनुराधा नक्षत्र
अभिजित्—नक्षत्रविशेष
अलि—वृश्चिक
अश्विनीपञ्चक — अश्विनी भरणी कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा
अहिवर—अहिस्वर—सप्तक, स्वर संख्या ७ =
(आ) आठ—अष्टमीतिथि
(इ) इङ्गुद—मूलिक फल विशेष।
इन्दुसर—मूसकास्वर एक–१ संख्या।
इन्द्र—पूर्वदिशा
(ई) ईशा—स्वामी,
(ए) एगारह—एकादशी तिथि
एकुनासा—११–३,–५–७. तिथि

(क) कंकोड़ाबान—ककड़ा
कटिमटी—छटपट
कलस—कुम्भराशि
कलह—झगड़ा
कनोंग—कदीमा
कान—शुक
कामा—कलहा
कोर—गुम्बा
कुजा—मङ्गलदिन
केसरि—सिंहराशि
क्षिप्र—शीघ्र
क्षिप्र—नक्षत्र संज्ञा विशेष
क्षेम—कल्याण
(ख) खोड़—ठक्कर
(ग) गज—हाथी
गजसर—हाथीकास्वर, ९ संख्या।
गगना—गनब
गजग्रह—एक प्रसिद्ध योग
(घ) घर—कुम्भराशि